माननीय राज्यपाल हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 7 जनवरी, 2018 को गीता विद्या मंदिर शाहबाद, कुरूक्षेत्र के वार्षिक उत्सव में दिया गया भाषण।

हरियाणा के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री तथा इस क्षेत्र के कर्मठ व लोकप्रिय विधायक, जो इस विद्यालय से पूर्ण मनोयोग से और आत्मीयता से जुड़े हुए हैं, श्री कृष्ण कुमार बेदी जी, ग्रामीण शिक्षा विकास समिति, हरियाणा प्रान्त के अध्यक्ष डॉ0 ऋषि राज वशिष्ठ जी, समिति के उपाध्यक्ष श्री सत्यनारायण आहूजा जी, नगर पार्षद श्री बलदेव राज सेठी जी, गीता विद्या मंदिर, शाहाबाद मारकंडा के अध्यक्ष श्री अशोक गुप्ता जी, विद्यालय के प्रबंधक श्री सत्यनारायण जी, विद्यालय की पूर्व छात्रा प्रसिद्व कोरियोग्राफर सुश्री पूजा चौधरी जी, विद्यालय समिति के सभी पदाधिकारीगण और इस अवसर पर बहुत बड़ी संख्या में बच्चों को आशीर्वाद देने के लिए यहां पर उपस्थित सम्माननीय महानुभाव, Teaching and non-teaching staff, पत्रकार बन्धुओ, सभी उपस्थित भाईयो और बहनो एवं इस विद्यालय में पढने वाले सभी मेरे प्रिय विद्यार्थीगण!

श्री कृष्ण कुमार बेदी जी कह रहे थे कि शाहबाद में कोई राज्यपाल पहली बार आया है। तब मैं सोच रहा था कि जब मैं विद्यार्थी था, पांचवी क्लास तक तो पढाई मैने अपने गांव में की, वहां से 8–10 मील दूर, उस समय मील थे, किलोमीटर नहीं थे। एक कस्बा था वहां पर जाकर मैने आठवीं की परीक्षा पास की। जब मैने उस कस्बे से आठवीं की परीक्षा पास की तो उसमें मैं पूरे जिले के अन्दर पहले नम्बर पर आया था। तब उस विद्यालय ने मुझे पुरस्कृत करने के लिए मध्य प्रदेश के शिक्षा मंत्री, जो बाद में सांसद भी बने, अब हमारे बीच में नहीं हैं, श्री नर सिंह राव जी को आमंत्रित किया था। उसके बाद मैं हाई स्कूल में पढने के लिए जिला मुख्यालय पर आया। हाई स्कूल की बोर्ड की परीक्षा होती थी। बोर्ड की परीक्षा में भी मैं मैरिट में आया। बाकी पढाई कॉलेज में हुई। प्राईवेट रूप से भी हुई।

यह सब मेरे परिचय में बताया गया कि मैं पहले शिक्षक था, फिर बाद में प्राध्यापक बना। लेकिन कभी कोई गवर्नर हमारे स्कूल या कॉलेज में नहीं आया। कालेज का तो मुझे ध्यान हीं नहीं है, लेकिन स्कूल में मध्य प्रदेश के शिक्षा मंत्री उस कस्बे में जरूर आये थे क्योंकि वे वहां के विधायक होते थे और उनको कस्बा बहुत प्रिय था। जैसे कि बेदी जी को अपना क्षेत्र प्रिय है। इनके आग्रह पर मैं यहां आया। वैसे मैं राज्यपाल रहते हुए हरियाणा में अन्य जगह कार्यक्रमों की जब रचना करता हूं तो विद्यार्थियों के बीच में जाऊं इसकी बहुत कोशिश करता हूं।

विद्यार्थियों के बीच जाकर मुझे ऐसा लगता है कि मैं अपने घर पर आया हूं। लेकिन समय की बहुत सीमा होती है। अगर हरियाणा में आप विश्वविद्यालयों की गिनती करेंगे तो 48 युनिवर्सिटी हैं और उनके विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम होते रहते हैं। Convocation तो होते ही हैं, उनकी खेलकूद की प्रतियोगितायें होती हैं, पुरस्कार वितरण समारोह होते हैं, सब तरह के कार्यक्रम होते हैं। सरकार के कार्यक्रम भी कम नहीं होते और हरियाणा सरकार के तो बहुत ज्यादा कार्यक्रम होते हैं। फिर कई

सामाजिक कार्यक्रम होते हैं–अच्छी संस्थायें भी, जो समाज के लिए काम कर रही हैं, जिले में काम करती हैं, उनका भी मैं अध्यक्ष हूं। तो आप कल्पना कर सकते हैं कि मैं जब इसने सारे कार्यक्रमों में जाने का क्रम तय करता हूं तो कभी आपके स्कूल का नंबर आ सकता है क्या?

विद्यार्थियों के बीच में मैं जाऊं यह इच्छा रखते हूए भी मैं सभी स्कूलों में नहीं जा सकता। लेकिन बेदी जी के आग्रह पर मैं शाहाबाद आया और इस कार्यक्रम में आने के बाद, कुछ कार्यक्रम ऐसे होते हैं जिनमें मन प्रसन्न होता है और कुछ कार्यक्रम ऐसे होते हैं जो ज्ञानवर्धक होते हैं, intellectual होते हैं और उनसे बुद्धि प्रसन्न होती है। लेकिन यहां पर आकर मैने दो–तीन सांस्कृतिक कार्यक्रम देखे। सबसे पहले सरस्वती वन्दना, उसके पश्चात दशमेश के चारों बच्चों का बलिदान, मेरा वाघा बार्डर और अन्त में गुरू गोबिन्द जी के लाल। इन कार्यक्रमों का प्रभाव, impact, impression हमारे मन पर और बुद्धि पर तो होता ही है, लेकिन सीधा हमारे हृदय पर भी होता है, सीधा अन्तःकरण को छूता है। इसलिए कुछ कार्यक्रम ऐसे होते हैं जिनमें मन प्रसन्न होता है और कुछ से बुद्धि प्रसन्न हेती है। लेकिन यहां पर आकर मैने ऐसे कार्यक्रम देखे जिनमें आत्मा प्रसन्न हो रही है। ये बहुत बड़ी बात है।

हमारा नौजवान साथी कह रहा था कि तालियां बजाओ। लेकिन जब कोई बात दिल को छूती है, हृदय को छूती है, भावनाओं को छूती है तो तालियॉ उसमें नहीं बज पातीं। आप देख रहे हैं जो कार्यक्रम यहां प्रस्तुत हो रहे हैं, उनका एक अलग impact है। इनका सीधा सम्बन्ध संस्कार से है, मनोरंजन से नहीं है– सीधा सम्बन्ध संस्कार से है। आप सोच सकते हैं कि समाज के अन्दर सही काम यही है– अच्छे लोग तैयार करना, अच्छे व्यक्ति तैयार करना। आप जरा विचार करो कि अगर बच्चे सही नहीं हैं, बच्चे स्वस्थ नहीं हैं, बच्चे संस्कारित नहीं हैं, बच्चे समझदार नहीं हैं, बच्चे सभ्य नहीं हैं, तब आप कल्पना करो कि देश का क्या होगा? देश का नहीं परिवार का क्या होगा? आपके परिवार में भी अगर बच्चे इन गुणों के साथ तैयार नहीं हुये तब उस परिवार का क्या होगा? पैसा काम नहीं आता है। अच्छा मकान काम नहीं आता है। आप अच्छे पद पर पहुंच चुके हैं वहे भी आपके जीवन को सफल सार्थक नहीं करता। सफल सार्थक करने की कोई चीज अगर परिवार में है तो वह बच्चे हैं। इसलिए जरा उनका कष्ट देखो, उन परिवार वालों का कष्ट देखो जिनके बच्चे ही नहीं हैं। इसलिए बच्चों को स्वस्थ बनाना, संस्कारित बनाना, चरित्रवान बनाना, सभ्य बनाना, यह कितना बड़ा काम है। इस काम को करने का काम सिवाए शिक्षा के, विद्यालय के और कोई नहीं कर सकता।

इसलिए सरकार को कई बार मैं कहता हूं कि बच्चों पर ध्यान दो, शिक्षा पर पर ध्यान दो। इसीलिए quality education की बात होती है। ऐसी education जिसमें से qualitative, गुण वाला, संस्कार वाला, सभ्य, देश के लिए समर्पित बच्चा पैदा हो।

आपने तो पूरा का पूरा वार्षिकोत्सव दशमेश श्री गुरू गोबिन्द सिहं जी को समर्पित किया है। भारतवर्ष के पूरे इतिहास में गुरू गोबिन्द सिहं जी जैसा समर्पित, श्रद्वावान, कल्याणकारी कोई व्यक्ति मेरे ध्यान में नहीं आता। गुरू गोबिन्द सिहं जी ऐसे महान पुरूष थे जिन्होंने बचपन में ही अपने पिता को बलिदान के लिए कहा। जब वे गोबिन्द

राय थे, अपने पिता जी की गोद में बैठे थे। जो बच्चा गोद में बैठा होता है उसकी क्या उम्र होती होगी? उसी समय कश्मीर के ब्राह्मण आए और उनके पिताजी से निवेदन करते हैं कि हम सब लोगों का ईमान जा रहा है, आप बचाईए, उसका कोई उपाए बताईए। इस पर गुरू गोबिन्द सिहं जी के पिता गुरू तेग बहादुर जी कहते हैं कि एक ही उपाए है कि किसी बड़े व्यक्ति को, किसी महान व्यक्ति को, इस अत्याचार को रोकने के लिए बलिदान देना पड़ेगा। तब पूरे देश के अन्दर जागृति पैदा होगी। यह जागृति कितनी आवश्यक होती है? जन आन्दोलन के समय अगर जागृति पैदा हो जाए तब कोई व्यक्ति टिक नहीं सकता। इसीलिए अंग्रेज यहां से गए। जनजागृति से जनआन्दोलन पैदा हुआ और जन आन्दोलन के लिए किसी न किसी महापुरूष को सब कुछ त्यागकर आगे आना पड़ता है।

यह सब सुनकर गोबिन्द राय अपने पिताजी को कहते हैं कि अगर इनका ईमान किसी महापुरूष के बलिदान से बच सकता है तो आपसे बड़ा महापुरूष और कौन होगा। इस छोटे से बालक ने अपने पिता को यह कहा और पिता ने बात मान ली। उनके ईमान को लेने वाले उस समय के शहंशाह को कह दिया कि इन बेचारे ब्राह्मणों को परेशान मत करो। अगर आपको धर्म परिवर्तन कराना है तो गुरू तेग बहादुर का कराओ। इस प्रकार गोबिन्द राय ने पिता का बलिदान दे दिया और बात यहीं पर नहीं रूकी। देश के रक्षार्थ, यहां की संस्कृति के रक्षार्थ, यहां की पहचान के रक्षार्थ अपने चारों बच्चों का भी बलिदान दे दिया। परिवार के अन्दर अगर सम्पूर्ण सम्पति होती है तो कोई बच्चा होता है। लेकिन गुरू गोबिंद सिंह जी के चार लाल, चारों बच्चे, दो युद्व में शहीद हो गए और और दो को सरहिंद की दीवार के अन्दर चिनवा दिया गया। इसलिए ऐसे महापुरूष के 300वें प्रकाशोत्सव को इस विद्यालय का वार्षिक उत्सव समर्पित है।

आप सोच सकते हैं कि इस तरह के विचारों की, इस तरह के संस्कारों की कितनी जरूरत है। ऐसी शिक्षा जिसमें संस्कार नहीं है, ऐसी शिक्षा जिसमें व्यक्ति का चरित्र निर्मित नहीं होता, ऐसी शिक्षा जिसमें व्यक्ति के मन में राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव पैदा नहीं होता, वह शिक्षा किस मतलब की है? वह शिक्षा देश का सफल नागरिक नहीं बना सकती। वह शिक्षा देश में सिर्फ कलर्क पैदा कर सकती है, व्यक्ति नहीं बना सकती।

यह विद्यालय अच्छे संस्कारों को लेकर के आगे बढ़ रहा है। इसलिए मैने कहा कि कार्यक्रम और उसकी छाप को लेकर आत्मा प्रसन्न हुई है। हम स्मार्ट सिटी बनाने वाले हैं। अपनी सरकार ने पूरे देश में 100 स्मार्ट सिटी बनाने की पहली योजना बनाई है और अब की बार तो सिटी नहीं, स्मार्ट देश भी बनाने वाले हैं। स्मार्ट गांव भी बनाने वाले हैं, सब कुछ बनाने वाले है। लेकिन विचार करो कि स्मार्ट विलेज में, स्मार्ट शहर में क्या चीजें होंगी? उसमें साफ–सफाई होगी, उसमें गन्दगी नहीं होगी, हरेक के पास मकान होगा, हरेक के पास रोजगार होगा, पानी की अच्छी व्यवस्था होगी, Infrastructure बढ़िया होगा। लेकिन स्मार्ट सिटी में, स्मार्ट विलेज में लोग अगर स्मार्ट नहीं हुये, लोग अगर सभ्य और समझदार नहीं हुये, लोग अगर संस्कारित और चरित्रवान नहीं हुये, तो ऐसी स्मार्ट सिटी अयोध्या नहीं बन पायेगी, लंका बन जायेगी

और लंका का भविष्य हम जानते हैं कि क्या होता है। ऐसी सोने की लंका हमको नहीं चाहिए जहां रावण जैसे लोग रहते हैं। स्मार्ट सिटी और स्मार्ट गांव इन सबका महत्व तो है, लेकिन इससे ज्यादा महत्व स्मार्ट आदमी का है। वह बनाने की बहुत जरूरत है। इसलिए सम्पूर्ण देश में इस काम को करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में जाने की बहुत जरूरत है। बच्चों को सम्भालिए, आपका घर सम्भलेगा। बच्चों को सम्भालिए, आपका देश सम्भलेगा। अगर आपने इनको नहीं सम्भाला तो परिवार भी नहीं सम्भलेगा, देश तो सम्भलेगा ही नहीं।

गांव में एक कहावत है –पूत कपूत का धन संचय और पूत सपूत तो का धन संचय – आपने पैसा तो बहुत इकट्ठा कर लिया लेकिन बच्चा तो कपूत है। तो क्या मतलब है उस पैसे का। वह तो और कपूत बन जायेगा। पैसा बर्बाद कर देगा। और अगर पूत सपूत है तो अपने आप कमा लेगा। आपको कमाने की क्या जरूरत है और इसलिए बच्चों को सम्भालने की बहुत जरूरत है।

कल मैं टी.वी पर एक घटना देख रहा था, घटना इटावा की है। इटावा उत्तर प्रदेश में है। उस इटावा में हर वर्ष एक मेला लगता है। वह इटावा की नुमाईश कहलाती है। रविवार के दिन छोटे से बच्चे ने अपने पिता को कहा कि मेरे कुछ साथी उस नुमाईश मेले में जा रहे हैं, मैं भी जाना चाहता हूं। पिता जी ने कहा कि मेरे पास पैसे नहीं है। मेरे पास अभी समय नहीं है, आगे देखेंगे। किसी ने देखा वह घटना क्या हुई है? पिता जी ने समझाने की कोशिश की, पर बच्चा नहीं माना। अन्त में आकर के पिता जी को गुस्सा आया और उसके दो चांटे मार दिए। बच्चे ने क्या किया? रोते हुये थाने में पहुंचा। थाने में थानेदार से बच्चे ने शिकायत की कि मेरे पिता जी ने मुझको मारा है, पिता जी मुझे परेशान करते हैं, हमारे साथ अन्न्याय करते हैं। हमारे पिता जी को आप पकड़ो थाने में लाओ और उनको कूटो। थाने के लोग बहुत आश्चर्यचकित थे। टी0वी0 पर घटना बताई जा रही थी तो हर शख्स सोच रहा था कि यह घटना सच है या झूठी? पता करने के लिए टी0वी0 वाले उस गांव में, उस थाने में पहुंच गये। थाने के थानेदार ने कहा कि घटना बिल्कुल सही है। इस बच्चे का यह नाम है। इसके माता–पिता उस गांव में रहते हैं। टी0 वी0 वाले वहां पहुंच गये। माता–पिता का इंटरव्यु लिया। उनसे पूछा। उन्होंने बताया कि हमारा बच्चा जिद्दी है, गुस्से में रहता है।

अब बताईए ऐसी घटना कब होगी? गड़बड़ दोनों में है। बच्चे को भी इतना जिद्दी नहीं होना चाहिए और पिता को भी इतना निर्दयी नहीं होना चाहिए। जरा समझाओ उसको, संस्कार दो, अपनी कोई भी मझबूरी है तो बच्चे को बताओ। बच्चा समझने की कोशिश करेगा। पता नहीं आपने बचपन में उसको क्या समझाया है। इसलिए मुझे गड़बड़ दोनों में नजर आती है। बाद में पुलिस वालों ने क्या किया? घर जाकर समझाया और उस बच्चे को और उसके साथियों को खुद नुमाइश में ले गई और घुमाया उसको, सबको घुमाया। इसलिए आप कल्पना कर सकते हैं कि बच्चों को अच्छा संस्कार देना कितना जरूरी है। इसलिए अपने देश में स्मार्ट स्कूल चाहिएं। यह स्कूल उन्हीं स्कूलों में से एक है क्योंकि इसकी स्थापना 1989 में हुई है, आज से 28 वर्ष पहले। और 1989 वह वर्ष है जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ0

हेडगेवार का जन्म हुआ था। इसलिए 1989 में उनकी जन्म शताब्दी मनाई जा रही थी। जिस तरह गुरू गोबिन्द सिंह जी का 350वां प्रकाश पर्व मनाया जा रहा है और उस शताब्दी वर्ष में कुरूक्षेत्र में हिंदू शिक्षा समिति ने यहां विद्यालय की स्थापना की है। इस विद्यालय का भी उद्देश्य यही है कि कैसे चरित्रवान, संस्कारित व्यक्ति पैदा हो।

आप सब के बीच में आकर, इन सब बातों से मैं जैसा सोचता हूं कि विद्यालय कैसा होना चाहिए, वैसा ही विद्यालय आगे बढ़ रहा है। आप सब जैसा कि बेदी जी बहुत सारे नाम ले रहे थे, उससे मुझे लगता है कि आप सबकी कृपा, आप सबका सहयोग, आप सबका आशीर्वाद, इस विद्यालय को है। मुझे लगता है कि इस विद्यालय को आगे बढ़ने में, भवन बनाने में और भी प्रगति में बाधा नहीं आनी चाहिए।

एक अतिरिक्त प्रसन्नता मुझे इसलिए है कि आज जिस विज्ञान प्रयोगशाला कक्ष का उदघाटन हुआ है, उस विज्ञान प्रयोगशाला कक्ष का नाम है– प्रो0 राजेन्द्र सिंह प्रयोगशाला। वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संचालक थे। मुझे अतिरिक्त खुशी यह है कि उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि 'नौकरी छोड़ सकते हो?' 'मैने कहा– हां, अगर आप कहेंगे तो मैं नौकरी छोड़ दूंगा।' मैंने नौकरी छोड़ दी और उन्होनें मुझे गृहस्थ होने के बावजूद, प्रांत प्रचारक बनाया– ये वे रज्जू भईया हैं।

इसलिए अतिरिक्त प्रसन्नता के साथ–साथ मैं इस विद्यालय की प्रगति के लिए शुभकामनाएं देता हूं। जिन बच्चों को मैने पुरस्कार दिया है–अच्छे बच्चे हैं, इन्होंने श्रेष्ठता प्राप्त की है, इनको आशीर्वाद। आप सबको बहुत–बहुत शुभकामनाएं। अपनी तरफ से अपने स्वैच्छिक कोष से इस विद्यालय के लिए 11 लाख रूपये आर्थिक सहयोग की घोषणा करता हूं। बच्चों का कार्यक्रम है, लम्बा समय लगेगा और इसलिए मैं इसके पश्चात जाना चाहुंगा आप सबसे क्षमा मांगते हुए। बहुत– बहुत धन्यवाद।

जयहिन्द!